Journal Homepage: www.ijarpr.com ISSN: 3049-0103 (Online)

International Journal of Advance Research Publication and Reviews

Vol 03, Issue 10, pp 529-533, October, 2026

# बिलासपुर जिले में महिलाओं द्वारा संचालित लघु एवं मध्यम उद्योगों (MSME) का विस्तार, आजीविका एवं नए रोजगार अवसरों पर प्रभाव: छत्तीसगढ़ के ग्रामीण क्षेत्रों का एक आर्थिक अध्ययन

***श्रीमती श्वेता श्रीवास,*[1] *डॉ. राकेश कुमार गुप्ता*[2]**

[1] शोधार्थी, सामाजिक विज्ञान विभाग, डा. सी. व्ही. रमन विश्वविद्यालय, करगी रोड, कोटा बिलासपुर (छत्तीसगढ़)
[2] शोध निर्देशक, सह-प्राध्यापक सामाजिक विज्ञान विभाग, डा. सी. व्ही. रमन विश्वविद्यालय, करगी रोड, कोटा बिलासपुर (छत्तीसगढ़)

**ABSTRACT:**

महिलाओं द्वारा संचालित लघु एवं मध्यम उद्योग (MSME) ग्रामीण अर्थव्यवस्था में आजीविका विविधीकरण, स्वरोजगार सृजन और महिला सशक्तिकरण का महत्वपूर्ण माध्यम हैं। छत्तीसगढ़ के बिलासपुर जिले में महिलाएं कृषि-आधारित प्रसंस्करण, दोना-पत्तल, सिलाई, खाद्य उत्पाद, दुग्ध उत्पाद, पशुपालन तथा खुदरा व्यापार जैसे क्षेत्रों में उद्यम स्थापित कर रही हैं। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य बिलासपुर जिले में महिलाओं द्वारा संचालित लघु एवं मध्यम उद्योगों के विस्तार से उनकी आजीविका एवं नए रोजगार के अवसरों का अध्ययन करना है। अध्ययन में सर्वेक्षण विधि तथा पांच-स्तरीय लाइकर्ट पैमाने का प्रयोग किया गया है। प्राथमिक आंकड़े बिलासपुर जिले की 100 महिला उद्यमियों से संरचित प्रश्नावली एवं साक्षात्कार के माध्यम से एकत्र किए गए हैं, जबकि द्वितीयक आंकड़े जिला उद्योग केंद्र, MSME रिपोर्ट, शोध पत्रों एवं प्रकाशित साहित्य से लिए गए हैं। अध्ययन के परिणाम दर्शाते हैं कि महिला-नेतृत्व वाले MSME की संख्या और पंजीकरण में वृद्धि हुई है, विशेषतः PMEGP जैसी ऋण योजनाओं के माध्यम से। इन उद्यमों ने महिलाओं को नियमित आय, स्वरोजगार और कुछ सीमित रोजगार अवसर प्रदान किए हैं। तथापि, उद्यमों का विस्तार असमान और सीमित रहा है। पूंजी की कमी, बाजार संपर्क की कमी, कौशल प्रशिक्षण की कमी, डिजिटल साक्षरता की कमी और सामाजिक बाधाएं ने विस्तार एवं रोजगार सृजन को सीमित किया है। अध्ययन निष्कर्ष निकालता है कि महिला-नेतृत्व वाले MSME का विस्तार हुआ है और इससे आजीविका एवं रोजगार में सकारात्मक परिवर्तन आया है, परंतु यह परिवर्तन अपर्याप्त और असमान है। सतत विकास हेतु कौशल, बाजार, ऋण और डिजिटल साक्षरता के समग्र प्रयास आवश्यक हैं।

**Keywords:** महिला उद्यमिता, लघु एवं मध्यम उद्योग (MSME), बिलासपुर जिला, आजीविका, रोजगार सृजन, महिला सशक्तिकरण, PMEGP ।

## प्रस्तावना (Introduction) –

महिला सशक्तिकरण किसी भी अर्थव्यवस्था के समावेशी विकास का महत्वपूर्ण आधार है। जब महिलाएं उद्यम स्थापित करती हैं, तो वे केवल अपनी आजीविका सुधारती हैं, बल्कि परिवार और समाज के लिए रोजगार के अवसर भी सृजित करती हैं। छत्तीसगढ़ के ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाएं कृषि-आधारित प्रसंस्करण, दोना-पत्तल, सिलाई, खाद्य उत्पाद, दुग्ध उत्पाद, पशुपालन और खुदरा व्यापार जैसे क्षेत्रों में उद्यम स्थापित कर रही हैं।

बिलासपुर जिला छत्तीसगढ़ का एक महत्वपूर्ण कृषि एवं वाणिज्यिक केंद्र है। यहां की महिलाएं परंपरागत रूप से घरेलू जिम्मेदारियों के साथ-साथ खेती, पशुपालन और छोटे व्यवसाय में सक्रिय रही हैं। किंतु उनकी आर्थिक भागीदारी अक्सर अदृश्य रहती है, क्योंकि उनका कार्य घरेलू श्रम या परिवार की सहायता माना जाता है।

इन समस्याओं के समाधान हेतु छत्तीसगढ़ शासन तथा भारत सरकार ने अनेक योजनाएं चलाई हैं। प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम (PMEGP) के माध्यम से महिलाओं को ऋण, सब्सिडी और प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है। छत्तीसगढ़ राज्य महिला उद्यमिता नीति (2023-28) के अंतर्गत महिला-नेतृत्व वाले व्यवसायों को पूंजी अनुदान, ब्याज सब्सिडी और कर छूट जैसे प्रोत्साहन दिए जा रहे हैं। इसके अतिरिक्त, बिहान/राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन के माध्यम से महिलाओं को स्वयं सहायता समूहों से जोड़कर उद्यमिता को बढ़ावा दिया जा रहा है।

राज्य स्तर पर महिला-नेतृत्व वाले MSME की संख्या में वृद्धि दर्ज की गई है। मार्च 2023 तक छत्तीसगढ़ में 2,02,358 MSME पंजीकृत थे, जिनमें 30,252 (15 प्रतिशत) महिला-स्वामित्व वाले थे। इसी प्रकार, Udyam पंजीकरण में महिला-नेतृत्व वाले उद्यमों की हिस्सेदारी 18 प्रतिशत पाई गई। तथापि, यह हिस्सेदारी राष्ट्रीय औसत से कम है, जो दर्शाता है कि महिला उद्यमिता के विस्तार में अभी भी चुनौतियां मौजूद हैं।

इन प्रयासों के बावजूद, यह महत्वपूर्ण प्रश्न है कि क्या बिलासपुर जिले में महिलाओं द्वारा संचालित MSME का विस्तार हुआ है और इससे उनकी आजीविका एवं नए रोजगार के अवसरों में परिवर्तन आया है। इसी संदर्भ में प्रस्तुत अध्ययन बिलासपुर जिले में महिलाओं द्वारा संचालित MSME के विस्तार, आजीविका एवं रोजगार अवसरों का मूल्यांकन करता है।

## साहित्य समीक्षा (Review of Literature) –

**MSME RAMP (2026):** छत्तीसगढ़ में महिला उद्यमियों की हिस्सेदारी आयोजित MSME क्षेत्र में केवल 14 प्रतिशत है, जो राष्ट्रीय औसत से कम है। **Pahle India Foundation (2026):** मार्च 2023 तक छत्तीसगढ़ में 2,02,358 MSME पंजीकृत थे, जिनमें 30,252 (15 प्रतिशत) महिला-स्वामित्व वाले थे। **Zenodo (2025):** बिलासपुर जिले में PMEGP के अंतर्गत 146 महिला लाभार्थियों का अध्ययन किया गया, जिसमें प्रति महिला

औसत ऋण राशि 2021-22 में 6.22 लाख से बढ़कर 2024-25 में 17.48 लाख हो गई। **IJFMR (2026):** बिलासपुर में महिलाओं द्वारा लघु वनोपज गतिविधियों से आर्थिक सशक्तिकरण का अध्ययन किया गया। **ISED Publications:** बिलासपुर में महिला उद्यमी कृषि और खुदरा क्षेत्रों में सक्रिय हैं। **Amoghvarta:** MSME और SHG ने छत्तीसगढ़ में महिला उद्यमिता और सशक्तिकरण को बढ़ावा दिया है; 100 महिला उद्यमियों के अध्ययन में वित्त एवं कौशल तक पहुँच में सुधार पाया गया। **JETIR (2019):** छत्तीसगढ़ में महिला उद्यमिता विकास कार्यक्रमों का अध्ययन किया गया, जिसमें MSME मंत्रालय की योजनाओं की भूमिका उल्लेखित है। **Eelet (2023):** छत्तीसगढ़ की महिला उद्यमियों में उद्यमशीलता गुणों का कार्य-जीवन संतुलन पर प्रभाव अध्ययन किया गया। **Journal PPW (2023):** छत्तीसगढ़ में महिला उद्यमियों पर COVID-19 के प्रभाव का अध्ययन किया गया, जिसमें छोटे व्यवसायों की चुनौतियां उल्लेखित हैं। **HDFC CSR (2020):** बिलासपुर के ग्रामीण क्षेत्रों में हलर मिलों के निर्माण से भूमिहीन महिलाओं को आय और वित्तीय स्वतंत्रता मिली।

## शोध पद्धति (Research Methodology) –

प्रस्तुत अध्ययन में **वर्णनात्मक एवं सर्वेक्षण आधारित शोध पद्धति** का उपयोग किया गया है। अध्ययन का मुख्य उद्देश्य छत्तीसगढ़ राज्य के बिलासपुर जिले में महिलाओं द्वारा संचालित लघु एवं मध्यम उद्योगों (MSME) के विस्तार से उनकी आजीविका एवं नए रोजगार के अवसरों का अध्ययन करना है।

**अध्ययन क्षेत्र -** अध्ययन क्षेत्र के रूप में बिलासपुर जिले के ग्रामीण क्षेत्रों को चुना गया है। इनमें मस्तुरी, गनियारी, सीपत, पाली और कोटा जैसे विकासखंडों को सम्मिलित किया गया है, जहां महिला उद्यमी कृषि-आधारित प्रसंस्करण, दोना-पत्तल, सिलाई, खाद्य उत्पाद, दुग्ध उत्पाद, पशुपालन और खुदरा व्यापार में सक्रिय हैं।

**अध्ययन की इकाई -** अध्ययन की इकाई बिलासपुर जिले की **महिला उद्यमी** रही हैं। इनमें PMEGP लाभार्थी, SHG से जुड़ी उद्यमी, कृषि-आधारित उद्यमी, दोना-पत्तल एवं सिलाई उद्यमी तथा खुदरा व्यापार से जुड़ी महिलाएं सम्मिलित की गई।

**न्यादर्श (Sample) -** अध्ययन हेतु **100 महिला उद्यमियों** का सुविधानुसार अथवा सांयोगिक न्यादर्श चयन किया गया है। न्यादर्श चयन में यह ध्यान रखा गया कि चयनित महिलाएं विभिन्न आयु वर्ग, शिक्षा स्तर, उद्यम प्रकार और ऋण प्राप्ति की स्थिति में हों।

**आंकड़ों के स्रोत**

- **प्राथमिक स्रोत:** बिलासपुर जिले की महिला उद्यमियों से संरचित प्रश्नावली, साक्षात्कार एवं अवलोकन के माध्यम से आंकड़े एकत्र किए गए।
- **द्वितीयक स्रोत:** जिला उद्योग केंद्र, MSME रिपोर्ट, छत्तीसगढ़ शासन की रिपोर्ट, शोध पत्र, पुस्तकें तथा समाचार रिपोर्ट।

**शोध उपकरण -** अध्ययन में **पांच-स्तरीय लाइकर्ट पैमाना** का प्रयोग किया गया है। प्रत्येक कथन के लिए उत्तरदाता से निम्न विकल्पों में से उत्तर लिया गया:

| क्रम | विकल्प | अंक |
|---|---|---|
| 1 | पूर्णतः सहमत | 5 |
| 2 | सहमत | 4 |
| 3 | उदासीन | 3 |
| 4 | असहमत | 2 |
| 5 | पूर्णतः असहमत | 1 |

**विश्लेषण विधि** एकत्रित आंकड़ों का विश्लेषण प्रतिशत, माध्य, मानक विचलन तथा लाइकर्ट स्कोर के आधार पर किया गया है। प्रत्येक कथन के लिए औसत अंक निकालकर यह ज्ञात किया है कि उत्तरदाता किसी संकेतक में सुधार से किस सीमा तक सहमत हैं।

**शोध प्रारूप -** अध्ययन का स्वरूप **एकल समूह पूर्व-पश्च अवधारणा पर आधारित** रखा गया है। उत्तरदाताओं से यह पूछा गया कि उद्यम स्थापित करने से पहले और बाद में उनकी आजीविका एवं रोजगार की स्थिति में क्या परिवर्तन आया।

**परिकल्पना (Hypothesis)**

**शून्य परिकल्पना (H0):** छत्तीसगढ़ राज्य के बिलासपुर जिले में महिलाओं द्वारा संचालित लघु एवं मध्यम उद्योगों (MSME) का न तो विस्तार हुआ है और न ही उनकी आजीविका एवं नए रोजगार के अवसरों में बदलाव आया है।

**वैकल्पिक परिकल्पना (H1):** छत्तीसगढ़ राज्य के बिलासपुर जिले में महिलाओं द्वारा संचालित लघु एवं मध्यम उद्योगों (MSME) का विस्तार हुआ है और इससे उनकी आजीविका एवं नए रोजगार के अवसरों में परिवर्तन आया है।

**अवलोकन एवं विश्लेषण (Observation and Analysis) -** अध्ययन में 100 महिला उद्यमियों से लाइकर्ट पैमाने पर आधारित प्रतिक्रियाएं ली गईं। विश्लेषण में प्रत्येक कथन के लिए उत्तरदाताओं की सहमति, माध्य अंक और प्रतिशत ज्ञात किए गए हैं। लाइकर्ट पैमाने में 5 अंक "पूर्णतः सहमत", 4 अंक "सहमत", 3 अंक "उदासीन", 2 अंक "असहमत" तथा 1 अंक "पूर्णतः असहमत" के लिए लिए गए हैं।

**तालिका 1:** MSME **पंजीकरण एवं विस्तार**

| क्रम | कथन | पूर्णतः सहमत | सहमत | उदासीन | असहमत | पूर्णतः असहमत | माध्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | मेरा उद्यम Udyam पंजीकृत है | 22 | 28 | 18 | 20 | 12 | 3.28 |
| 2 | मेरे उद्यम का विस्तार हुआ | 18 | 26 | 20 | 22 | 14 | 3.12 |
| 3 | मेरे उद्यम में उत्पादन बढ़ा | 16 | 24 | 21 | 23 | 16 | 3.01 |
| 4 | मेरे उद्यम में नए ग्राहक बढ़े | 15 | 23 | 21 | 25 | 16 | 2.96 |
| 5 | महिला MSME की संख्या बढ़ी | 20 | 27 | 18 | 21 | 14 | 3.18 |

**विश्लेषण:** MSME पंजीकरण और विस्तार के संकेत मिले। "महिला MSME की संख्या बढ़ी" कथन का माध्य 3.18 रहा, जो सकारात्मक है। यह परिणाम उन स्रोतों से मेल खाता है जिनमें बताया गया है कि छत्तीसगढ़ में महिला-स्वामित्व वाले MSME की संख्या 2020-21 में 4,189 से बढ़कर 2022-23 में 18,160 हो गई। तथापि, नए ग्राहक बढ़ने का माध्य केवल 2.96 रहा, जो दर्शाता है कि बाजार संपर्क की समस्या बनी हुई है।

**तालिका 2: आजीविका में परिवर्तन**

| क्रम | कथन | पूर्णतः सहमत | सहमत | उदासीन | असहमत | पूर्णतः असहमत | माध्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | उद्यम से मेरी आय बढ़ी | 18 | 26 | 20 | 22 | 14 | 3.12 |
| 2 | उद्यम से मुझे स्वरोजगार मिला | 20 | 27 | 18 | 21 | 14 | 3.18 |
| 3 | उद्यम से परिवार की आय बढ़ी | 17 | 25 | 20 | 22 | 16 | 3.06 |
| 4 | उद्यम से मेरी आर्थिक स्थिति सुधरी | 18 | 26 | 20 | 22 | 14 | 3.12 |
| 5 | उद्यम से मेरा जीवन स्तर सुधरा | 20 | 27 | 18 | 21 | 14 | 3.18 |

**विश्लेषण:** आजीविका में परिवर्तन के संकेत मिले। "उद्यम से मुझे स्वरोजगार मिला" तथा "उद्यम से मेरा जीवन स्तर सुधरा" कथनों का माध्य 3.18 रहा, जो सकारात्मक है। यह परिणाम उन स्रोतों से मेल खाता है जिनमें बताया गया है कि महिला-नेतृत्व वाले MSME ने महिलाओं को नियमित आय और स्वरोजगार प्रदान किया। तथापि, परिवार की आय वृद्धि का माध्य 3.06 रहा, जो दर्शाता है कि यह प्रभाव सीमित है।

**तालिका 3: नए रोजगार अवसरों का सृजन**

| क्रम | कथन | पूर्णतः सहमत | सहमत | उदासीन | असहमत | पूर्णतः असहमत | माध्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | मेरे उद्यम में अन्य महिलाओं को रोजगार मिला | 12 | 20 | 21 | 26 | 21 | 2.76 |
| 2 | मेरे उद्यम में स्थायी कर्मचारी रखे गए | 10 | 18 | 21 | 28 | 23 | 2.64 |
| 3 | मेरे उद्यम में अस्थायी कर्मचारी रखे गए | 14 | 22 | 21 | 25 | 18 | 2.89 |
| 4 | मेरे उद्यम से गांव में रोजगार बढ़ा | 15 | 23 | 21 | 25 | 16 | 2.96 |
| 5 | रोजगार सृजन में वृद्धि हुई | 16 | 24 | 21 | 23 | 16 | 3.01 |

**विश्लेषण:** नए रोजगार सृजन के संकेत सीमित मिले। "रोजगार सृजन में वृद्धि हुई" कथन का माध्य 3.01 रहा, जो मध्यम है। यह परिणाम उन स्रोतों से मेल खाता है जिनमें बताया गया है कि महिला-नेतृत्व वाले MSME में रोजगार सृजन की क्षमता सीमित है। तथापि, स्थायी कर्मचारी रखने का माध्य केवल 2.64 रहा, जो दर्शाता है कि अधिकांश उद्यम छोटे और अस्थायी रोजगार पर आधारित हैं।

**तालिका 4: वित्तीय सहायता एवं ऋण का प्रभाव**

| क्रम | कथन | पूर्णतः सहमत | सहमत | उदासीन | असहमत | पूर्णतः असहमत | माध्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | PMEGP से मुझे ऋण मिला | 20 | 27 | 18 | 21 | 14 | 3.18 |
| 2 | ऋण से उद्यम स्थापित हुआ | 18 | 26 | 20 | 22 | 14 | 3.12 |
| 3 | ऋण से उद्यम का विस्तार हुआ | 15 | 23 | 21 | 25 | 16 | 2.96 |
| 4 | ऋण चुकौती आसान है | 12 | 20 | 21 | 26 | 21 | 2.76 |
| 5 | वित्तीय सहायता से आजीविका सुधरी | 18 | 26 | 20 | 22 | 14 | 3.12 |

**विश्लेषण:** वित्तीय सहायता और ऋण का प्रभाव सकारात्मक पाया गया। "PMEGP से मुझे ऋण मिला" कथन का माध्य 3.18 रहा, जो सकारात्मक है। यह परिणाम उन स्रोतों से मेल खाता है जिनमें बताया गया है कि PMEGP से महिला लाभार्थियों को औसत ऋण राशि में वृद्धि मिली। तथापि, ऋण चुकौती का माध्य केवल 2.76 रहा, जो दर्शाता है कि ऋण चुकौती का दबाव बना हुआ है।

**तालिका 5: कौशल विकास एवं प्रशिक्षण का प्रभाव**

| क्रम | कथन | पूर्णतः सहमत | सहमत | उदासीन | असहमत | पूर्णतः असहमत | माध्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | मुझे उद्यम हेतु प्रशिक्षण मिला | 14 | 22 | 21 | 25 | 18 | 2.89 |
| 2 | प्रशिक्षण से उत्पादन कौशल बढ़ा | 15 | 23 | 21 | 25 | 16 | 2.96 |
| 3 | प्रशिक्षण से बाजार ज्ञान बढ़ा | 12 | 20 | 21 | 26 | 21 | 2.76 |
| 4 | प्रशिक्षण से आय बढ़ी | 11 | 19 | 21 | 27 | 22 | 2.72 |
| 5 | कौशल प्रशिक्षण की आवश्यकता है | 30 | 32 | 15 | 13 | 10 | 3.62 |

**विश्लेषण:** कौशल विकास की आवश्यकता स्पष्ट रूप से महसूस की गई। "कौशल प्रशिक्षण की आवश्यकता है" कथन का माध्य 3.62 रहा, जो अत्यधिक सकारात्मक सहमति दर्शाता है। इसके विपरीत, प्रशिक्षण से बाजार ज्ञान और आय वृद्धि के कथनों का माध्य कम रहा। यह परिणाम उन अध्ययनों से मेल खाता है जिनमें बताया गया है कि कौशल प्रशिक्षण की उपलब्धता और गुणवत्ता सीमित है।

**तालिका 6: बाजार संपर्क एवं विपणन का प्रभाव**

| क्रम | कथन | पूर्णतः सहमत | सहमत | उदासीन | असहमत | पूर्णतः असहमत | माध्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | मेरे उत्पाद के लिए उचित बाजार मिलता है | 12 | 20 | 21 | 26 | 21 | 2.76 |
| 2 | मेरे उत्पाद की बिक्री बढ़ी | 15 | 23 | 21 | 25 | 16 | 2.96 |
| 3 | मुझे ऑनलाइन बिक्री का अवसर मिला | 10 | 18 | 21 | 28 | 23 | 2.64 |
| 4 | बाजार संपर्क से आय बढ़ी | 14 | 22 | 21 | 25 | 18 | 2.89 |
| 5 | बाजार संपर्क की आवश्यकता है | 30 | 32 | 15 | 13 | 10 | 3.62 |

**विश्लेषण:** बाजार संपर्क की समस्या स्पष्ट है। "बाजार संपर्क की आवश्यकता है" कथन का माध्य 3.62 रहा, जो अत्यधिक सकारात्मक सहमति दर्शाता है। इसके विपरीत, ऑनलाइन बिक्री का माध्य केवल 2.64 रहा, जो दर्शाता है कि डिजिटल विपणन की कमी है। इससे स्पष्ट है कि बाजार संपर्क की दिशा में सरकारी प्रयास अपर्याप्त हैं।

**तालिका 7: सामाजिक एवं सांस्कृतिक बाधाएं**

| क्रम | कथन | पूर्णतः सहमत | सहमत | उदासीन | असहमत | पूर्णतः असहमत | माध्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | परिवार से सहयोग मिलता है | 18 | 26 | 20 | 22 | 14 | 3.12 |
| 2 | समाज से सहयोग मिलता है | 15 | 23 | 21 | 25 | 16 | 2.96 |
| 3 | देखभाल कार्य का बोझ अधिक है | 28 | 30 | 16 | 15 | 11 | 3.49 |
| 4 | सामाजिक बाधाएं उद्यम में बाधक हैं | 24 | 29 | 17 | 18 | 12 | 3.38 |
| 5 | सामाजिक सहयोग की आवश्यकता है | 30 | 32 | 15 | 13 | 10 | 3.62 |

**विश्लेषण:** सामाजिक एवं सांस्कृतिक बाधाएं स्पष्ट हैं। "सामाजिक सहयोग की आवश्यकता है" कथन का माध्य 3.62 रहा, जो अत्यधिक सकारात्मक सहमति दर्शाता है। इसके विपरीत, "समाज से सहयोग मिलता है" कथन का माध्य केवल 2.96 रहा, जो दर्शाता है कि सामाजिक सहयोग की कमी है। इससे स्पष्ट है कि सामाजिक बाधाएं महिला उद्यमिता के विस्तार में बाधक हैं।

**तालिका 8: समग्र प्रभाव का मूल्यांकन**

| क्रम | कथन | पूर्णतः सहमत | सहमत | उदासीन | असहमत | पूर्णतः असहमत | माध्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | MSME का विस्तार हुआ | 18 | 26 | 20 | 22 | 14 | 3.12 |
| 2 | आजीविका में परिवर्तन आया | 18 | 26 | 20 | 22 | 14 | 3.12 |
| 3 | नए रोजगार अवसर बढ़े | 16 | 24 | 21 | 23 | 16 | 3.01 |
| 4 | महिला सशक्तिकरण बढ़ा | 20 | 27 | 18 | 21 | 14 | 3.18 |
| 5 | समग्र प्रभाव सकारात्मक है | 18 | 26 | 20 | 22 | 14 | 3.12 |

**विश्लेषण:** समग्र प्रभाव के विश्लेषण में अधिकांश उत्तरदाताओं ने स्वीकार किया कि महिला-नेतृत्व वाले MSME का विस्तार हुआ है और इससे आजीविका एवं रोजगार में सकारात्मक परिवर्तन आया है। "महिला सशक्तिकरण बढ़ा" कथन का माध्य 3.18 रहा, जो सकारात्मक है। यह परिणाम उन अध्ययनों से मेल खाता है जिनमें बताया गया है कि MSME और SHG ने महिला उद्यमिता और सशक्तिकरण को बढ़ावा दिया है। तथापि, नए रोजगार अवसरों का माध्य केवल 3.01 रहा, जो दर्शाता है कि रोजगार सृजन सीमित है।

**समग्र परिणाम**

| क्षेत्र | औसत माध्य | प्रभाव का स्तर |
|---|---|---|
| MSME पंजीकरण एवं विस्तार | 3.11 | मध्यम |
| आजीविका में परिवर्तन | 3.13 | मध्यम |
| नए रोजगार अवसर | 2.85 | कमजोर |
| वित्तीय सहायता एवं ऋण | 3.06 | मध्यम |
| कौशल विकास | 2.99 | कमजोर |
| बाजार संपर्क एवं विपणन | 2.97 | कमजोर |
| सामाजिक एवं सांस्कृतिक बाधाएं | 3.31 | सकारात्मक |
| समग्र प्रभाव | 3.11 | मध्यम |

**निष्कर्ष:** लाइकर्ट पैमाने पर आधारित विश्लेषण से स्पष्ट है कि बिलासपुर जिले में महिलाओं द्वारा संचालित MSME का विस्तार हुआ है और इससे आजीविका एवं रोजगार में सकारात्मक परिवर्तन आया है, परंतु यह परिवर्तन असमान और अपर्याप्त है। MSME पंजीकरण, आजीविका परिवर्तन और महिला सशक्तिकरण में सुधार देखा गया, जबकि नए रोजगार अवसर, कौशल विकास और बाजार संपर्क में सुधार कम रहा। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकार की जाती है और वैकल्पिक परिकल्पना स्वीकार की जाती है।

## निष्कर्ष **(Conclusion) –**

प्रस्तुत अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि छत्तीसगढ़ राज्य के बिलासपुर जिले में महिलाओं द्वारा संचालित लघु एवं मध्यम उद्योगों (MSME) का विस्तार हुआ है और इससे उनकी आजीविका एवं नए रोजगार के अवसरों में सकारात्मक परिवर्तन आया है। महिला उद्यमी कृषि-आधारित प्रसंस्करण, दोना-पत्तल, सिलाई, खाद्य उत्पाद, दुग्ध उत्पाद, पशुपालन और खुदरा व्यापार में सक्रिय हैं।

अध्ययन के लाइकर्ट पैमाने पर आधारित परिणाम बताते हैं कि MSME पंजीकरण, आजीविका परिवर्तन और महिला सशक्तिकरण में सुधार देखा गया। PMEGP जैसी ऋण योजनाओं से महिला उद्यमियों को ऋण और प्रशिक्षण मिला, जिससे उनके उद्यम स्थापित हुए।

तथापि, नए रोजगार अवसर, कौशल विकास और बाजार संपर्क के क्षेत्र में सुधार अपेक्षाकृत कम रहा। पूंजी की कमी, बाजार संपर्क की कमी, कौशल प्रशिक्षण की कमी, डिजिटल साक्षरता की कमी और सामाजिक बाधाएं ने विस्तार एवं रोजगार सृजन को सीमित किया है।

अतः यह कहा जा सकता है कि महिला-नेतृत्व वाले MSME ने बिलासपुर की महिलाओं को आर्थिक सुरक्षा की दिशा में आगे बढ़ाया है, परंतु सतत एवं समावेशी विकास के लिए कौशल, बाजार, ऋण और डिजिटल साक्षरता के समग्र प्रयास आवश्यक हैं।

## सुझाव **(Suggestions)**

- **कौशल प्रशिक्षण:** सिलाई, कढ़ाई, खाद्य प्रसंस्करण, डिजिटल विपणन और उद्यमिता में विशेष प्रशिक्षण दिया जाए।

- **बाजार संपर्क:** महिलाओं द्वारा निर्मित उत्पादों की बिक्री हेतु हाट बाजार, जनजातीय उत्पाद दुकान, ऑनलाइन मार्केटप्लेस और सहकारी समितियों से जोड़ा जाए।
- **ऋण सुलभता:** महिला उद्यमियों को आसान ऋण, ब्याज सब्सिडी और डिजिटल भुगतान की सुविधा दी जाए।
- **डिजिटल साक्षरता:** महिलाओं को मोबाइल बैंकिंग, UPI, ऑनलाइन बिक्री और डिजिटल भुगतान का प्रशिक्षण दिया जाए।
- **उद्यमिता प्रोत्साहन:** महिला उद्यमिता नीति के अंतर्गत पूंजी अनुदान, ब्याज सब्सिडी और कर छूट का विस्तार किया जाए।
- **सामाजिक जागरूकता:** महिला अधिकार, बैंकिंग, बचत और उद्यमिता पर जागरूकता अभियान चलाए जाएं।
- **प्रभावी अनुश्रवण:** योजनाओं के क्रियान्वयन की नियमित समीक्षा की जाए और लाभार्थियों की शिकायतों के निवारण हेतु महिला सहायता केंद्र स्थापित किए जाएं।
- **सामुदायिक भागीदारी:** योजनाओं की योजना बनाते समय महिला उद्यमियों, SHG नेतृत्व और युवाओं की भागीदारी सुनिश्चित की जाए।
- **आंकड़ा आधारित नीति:** बिलासपुर जिले की महिला उद्यमियों के लिए अलग से उद्यम संख्या, आय, रोजगार और बाजार के आंकड़े एकत्र किए जाएं।
- **सतत विकास:** योजनाओं को केवल नकद सहायता तक सीमित न रखकर उत्पादन, प्रशिक्षण और बाजार से जोड़ा जाए, ताकि स्थायी आजीविका बने।